कविता

15

गणित एक, काम अनेक

दिव्या सिंह*

गणित एक काम अनेक
हर पल रहता संग
इसके बिना हम सबका
जीवन है बेरंग।

मन को भाए
सीख जो जाए
गणित विषय का
डर न सताए।

माता-पिता भी साथ निभाएँ
गुरु जी भी खेल खेलाएँ
गणित विषय को
मजेदार बनाएँ।

अरे-अरे कहीं
दूर न जाएँ
हर पल गणित को
पास ही पाएँ।

*टी.जी.टी. (गणित), राजकीय उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय, विजय पार्क, मौजपुर, दिल्ली 110 053

चादर, कागज, दुपट्टा
आकार है इनमें बसता
चार भुजाएँ, चार समकोण
आयत है नाम इसका।

आओ सब मिलकर
एक पहेली बुझाएँ
गणित विषय को
रोचक बनाएँ।

लूडो, कैरम खेलते जाएँ
साँप-सीढ़ी भी मन को भाए
सोचें तनिक और बताएँ, ध्यान लगाएँ
ये तीनों खेल वर्गाकार ही क्यों बन पाएँ।